आपातकाल में सृजन फुलवारी

तन्मय सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

तन्मय सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-192-3
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चैक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, तन्मय सुराना
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY TANMAY SURANA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	जवाब नहीं है	6
2.	एक ख्वाब देखा है	7
3.	बस चलता जा रहा हूँ	8
4.	बताना चाहता हूँ	9
5.	साथ दो	10
6.	अकेला हूँ, आवारा हूँ, खुश हूँ!	11
7.	बहुत याद आते हैं	12
8.	पाबंदियाँ	13
9.	क्या कर रहा हूँ मैं?	14
10.	सोचता हूँ कभी-कभी	15
11.	ख्वाब तुम्हारे क्यूँ?	16
12.	लम्हे	16
13.	मैं तुम्हारी समझ से थोड़ा ज्यादा हूँ!	17
14.	बहुत दर्द है	18
15.	जिंदगी आसान थी	19
16.	ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं?	20
17.	तुम्हारे लिए	21

जवाब नहीं है

कभी-कभी पूछता हूँ खुद से,
सपने अगर अपनों से दूर ले जाएं,
तो फिर अपनों का क्या?

और
अगर अपनों से ही हर खुशी है,
तो फिर सपनों का क्या?

और
अगर जिंदगी में खुशी नहीं है,
तो फिर जिंदगी का क्या?

क्या कभी सपने पूरे करके
अपनों के साथ
खुशी से जिंदगी जी पाऊंगा?
जवाब नहीं है,

बस
सवाल दोहराता रहता हूँ,..!

एक ख्वाब देखा है

धुंधला सा ही सही
पर कुछ खास देखा है,
सुबह-सुबह मैंने
एक ख्वाब देखा है!

वो ख्वाब
जो जिंदगी के शोर से दूर
आफताब के किसी किनारे पर
कहीं तन्हा सा बैठा था,

और मैं
जिंदगी के शोर में मिला हुआ
लोगों के बीच
कहीं अकेला सा खड़ा था,

सोच रहा हूँ
मिलने चले जाऊँ उससे
शायद हम दोनों पूरे हो जाएंगे
शायद!

पर सब कुछ धुंधला सा है,...!

बस चलता जा रहा हूँ

मंजिल का तो पता नहीं
बस चलता जा रहा हूँ,..

अब तो राहें भी खत्म हो गई
शायद रास्ते भी खुद बना रहा हूँ,..

किसी ने साथ छोड़ा,
किसी ने रिश्ता जोड़ा,..
हर कोई बस मुसाफ़िर है जिंदगी में,
यही सोचकर बस गुजरता जा रहा हूँ

बस चलता जा रहा हूँ
शायद रास्ते भी खुद बना रहा हूँ,..

अगर मेरे रास्ते
तुम्हारी मंजिल से आगे निकल जाएं
तो माफ कर देना,..!

बताना चाहता हूँ

बताना चाहता हूँ दुनिया को
मैं कौन हूँ
मैं क्या कर सकता हूँ
हाँ, मुझमें एक शोर है जो खामोश है!

बताना चाहता हूँ उसे,
कि उसकी जुल्फों से टकराती हुई हवा,
कैसे मेरे दिल को छू जाती है,
और कैसे मुझे उससे, हर रोज मोहब्बत हो जाती है,
हाँ, मुझमें एक दिल है जो मदहोश है!

दुनिया बदलने की ताकत है,
दिल मे हौसला और हारने की आदत है,
पर आजकल गुम हो जाता हूँ इसी दुनिया में,
हाँ, मुझमें एक जोश है जो बेहोश है!

एक शोर है जो खामोश है!
एक दिल है जो मदहोश है!
एक जोश है जो बेहोश है!
शायद कोई देख नहीं पा रहा है
बस इस बात का अफसोस है!

साथ दो

अरे जनाब, ज़रा मौत तक तो साथ दो,..

क्यूँ चलते-चलते खत्म हो जाएंगे रास्ते?
अकेला हूँ मैं, ज़रा घर तक तो साथ दो,..

क्यूँ एकदम से बंद हो गई उसके प्यार की लोरी
नींद का छोड़ो, एक झपकी तक तो साथ दो,..

क्यूँ ये दूरियाँ बढ़ती चली गई?
कयामत का छोड़ो, कल सुबह तक का तो साथ दो,..

क्यूँ सुनते-सुनते सो गए हो?
कहानी का छोड़ो, एक किस्से तक तो साथ दो,..

क्यूँ दर्द देते-देते रुक गए यूँ?
अरे जनाब! जरा मौत तक तो साथ दो,..!

अकेला हूँ, आवारा हूँ, खुश हूँ!

कभी किसी की नज़रों में गिर जाता हूँ,
तो कभी किसी के दिल से निकल जाता हूँ,
पर अब फर्क नहीं पड़ता,
खुदगर्ज़, मतलबी, बेपरवाह हूँ, खुश हूँ!
अकेला हूँ, आवारा हूँ, खुश हूँ!

कभी खुद से ही लड़ लेता हूँ,
खुद को ही हरा देता हूँ,
कभी खुद के ख्वाबों में आके,
खुद को ही सुला देता हूँ
शान्त, दर्दभरा, बेसहारा हूँ, खुश हूँ!
अकेला हूँ, आवारा हूँ, खुश हूँ!

बेशरम हूँ, बेफिकरा हूँ, बंजारा हूँ,
खुदगर्ज़ हूँ, मतलबी हूँ, बेपरवाह हूँ,
शान्त हूँ, दर्दभरा हूँ, बेसहारा हूँ,
अकेला हूँ, आवारा हूँ, पर जैसा भी हूँ,
खुश हूँ!

बहुत याद आते हैं

कुछ लोग जो समय की किताबों के पन्नों में बेवजह पीछे छूट जाते हैं,
वो आज भी बहुत याद आते हैं!
आँखे बंद करके देखो,
कहीं हॉस्टल के कमरों से,
स्कूल बस की खिड़कियों से,
इंस्टाग्राम में सौ वीक पुराने डीएमएस से,
आज भी वो हमें देखकर मुस्कुराते हैं,
वो कुछ लोग जो समय की किताबों के पन्नों में
बेवजह पीछे छूट जाते हैं,
वो आज भी बहुत याद आते हैं!
उन कुछ लोगों से कुछ बातें, आज भी बाकी है!
उन कुछ लोगों की कुछ यादें,
आज भी बाकी है!
चाहे दुनिया से कितना भी छुपा लो,
उन कुछ लोगों के लिए, दिल में प्यार
आज भी बाकी है!
याद है मुझे आज भी वो हँसी, वो खुशी, वो दोस्ती,
वो सफर जो पूरा रह गया, उसे पूरा करने की चाहत,
आज भी बाकी है!
आज भी दिल के किसी कोने में महफ़ूज़ हैं
कभी-कभी ख्वाबों में आते हैं,
फिर थोड़ा मुस्कुराते हैं, फिर दिल मिलाते हैं,
और फिर से छोड़कर चले जाते हैं,
कभी जो आपके हर सवाल का जवाब देते थे,
वो एक दिन खुद सवाल बन जाते हैं,
वो कुछ लोग जो समय की किताबों के पन्नों में
बेवजह पीछे छूट जाते हैं,
वो आज भी बहुत याद आते हैं!
मेरी भी एक दोस्त ऐसे ही
समय की किताब में इतिहास बन गई,
अगर वो पढ़ रही है तो सिर्फ एक सवाल पूछना चाहता हूँ उससे,
मुझसे दोस्ती करोगी? फिर से,..!

पाबंदियाँ

शायद पाबंदियाँ ही अच्छी थी!
वो छुप-छुप कर फों पर बात करना,
क्लास बंक करने पर सबसे बचकर निकलना!
सेक्शन अलग था तुम्हारा ओर हर रोज मिलने का बहाना,
पाँच मिनट की मीटिंग के लिए सेम टाइम पे पानी भरने आना!

वो स्कूल की ट्रेंडिंग गॉसिप्स में नंबर वन रहना,
और किसी के पूछने पर 'वी आर जस्ट फ्रेंड्स' कहना!
वो पाँच मिनट हाथ पकड़ने को बहुत बड़ा मोमेंट बताना,
गुस्सा होने पर डीपी और स्टेटस हटाना!
वो वेलेंटाइन वीक्स को दीवाली की तरह मनाना,
और फ्रेंडशिप डे पे तुम्हारे लिए सबसे अच्छा फ्रेंडशिप बैंड ले के आना!

नोटबुक में रखकर लेटर्स पास करना,
छोटी-छोटी बातों पर कुत्तों की तरह लड़ना,
लड़ते हुए पकड़े जाने और एक-दूसरे को डिफेण्ड करना!
वो ब्लैंकेट के अंदर घुस के लेटनाइट चैटिंग,
घरवालों के देख लेने पर सोने की एक्टिंग,

यार आज 1 जीबी डेटा भी वर्थलेस है,
पर वो टेक्स्ट मैसेजेस की बातें वर्थइट थी!
पहले डर था, रिस्ट्रिक्शन्स थे, लिमिट्स थी,
पर जिंदगी बहुत अच्छी थी,
शायद पाबंदियाँ ही अच्छी थी!

क्या कर रहा हूँ मैं?

जब खुद से पूछा, क्या कर रहा हूँ मैं?
जवाब आया, कुछ कागजी सपनों के पीछे बिखर रहा हूँ मैं!

निकल चुका हूँ घर से खुद की तलाश में,
एक जंगली से दिल, एक ढूंढ़ल सा ख्वाब और तेरी यादें लिए साथ में,
और अब दर्द देखो,
तूफानों से भी ज्यादा किनारे से डर रहा हूँ मैं
कुछ कागजी सपनों के पीछे बिखर रहा हूँ मैं!

हाँ! सही सुना आपने, अब किनारा नहीं चाहिए,
तूफानों से मोहब्बत है मुझे,
अब यादों का सहारा नहीं चाहिए,
पर फिर दर्द देखो,
आज़ाद परिंदा हूँ पर तेरी जुल्फों के पिंजरे से डर रहा हूँ मैं,
कुछ कागजी सपनों के पीछे बिखर रहा हूँ मैं!

हर रोज जी रहा हूँ,
हर रोज मर रहा हूँ,
गिर रहा हूँ, संभल रहा हूँ,
खुद से ही लड़ रहा हूँ मैं,
कुछ कागजी सपनों के पीछे बिखर रहा हूँ मैं!

सोचता हूँ कभी-कभी

सोचता हूँ कभी-कभी
कि कह दूँ अपने दिल की हर बात,
कबूल कर लूँ अपने सारे अपराध,
खोल दूँ अपना हर राज़,
और माफ कर दूँ हर किसी के!

खत्म कर दूँ वो सारे रिश्ते,
जो बिना मन के निभाए जा रहा हूँ,
तोड़ दूँ वो सारे नाते,
जिनके बोझ तले दबता जा रहा हूँ!

भूल जाऊं उन सारे लोगों को,
जो छोड़कर चले गए,
भूल जाऊँ अपनी हर नाकामयाबी,
भूल जाऊँ हर दर्द, हर तकलीफ,
हर मुसीबत और हर ज़ख्म को!
और सो जाऊँ सुकून से!

सो जाऊँ सुकून से,
फिर सुबह उठकर एक नयी जिंदगी की शुरुआत करूँ!
बस सोचता हूँ कभी-कभी!
ऑलवेज कभी-कभी!

ख्वाब तुम्हारे क्यूँ?

रातें मेरी, नींद मेरी, पर ख्वाब तुम्हारे क्यूँ?
आँखें मेरी, ऑसू मेरे, पर प्यार तुम्हारा क्यूँ?

दिल मेरा, धड़कन मेरी, पर दर्द तुम्हारा क्यूँ?
लफ्ज़ मेरे, अल्फ़ाज़ मेरे, पर जिक्र तुम्हारा क्यूँ?

लम्हे

वो दोस्ती के लम्हे, उन लम्हों की यादें!
वो निःस्वार्थ रिश्ते, उन रिश्तों के वादे!

वो हसीन मुलाकातें, और बेसिर-पैर बातें!
वो लांग ड्राइव्स, और फ्रेंच फ्राइज!
वो टाइट हग्स, और हाई-फाइव्स!

अब इन बातों को यादों में नहीं,
असल जिंदगी में दोहराना चाहता हूँ!

पुरानी यादें कुछ ज्यादा ही पुरानी हो गई हैं,
कुछ नयी यादें बनाना चाहता हूँ!

मैं तुम्हारी समझ से थोड़ा ज्यादा हूँ!

शतरंज के खेल में,
वजीर बनने वाला वो प्यादा हूँ
हाँ!
मैं तुम्हारी समझ से थोड़ा ज्यादा हूँ!

सफलता के साथ संघर्ष को भी सलाम करता हूँ,
उगते और डूबते दोनों सूरज को प्रणाम करता हूँ,
कोई अजीब कहता है,
कोई कहता है कि शायद पागल आधा हूँ,
मैं तुम्हारी समझ से थोड़ा ज्यादा हूँ!

मीरा की मोहब्बत हूँ,
अल्लाह की रहमत हूँ,
गीता, बाइबिल और कुरान
तीनों से सहमत हूँ,
मैं रामायण में लिखा श्री राम का वादा हूँ
हाँ!
मैं तुम्हारी समझ से थोड़ा ज्यादा हूँ!

बहुत दर्द है

उस हाथ के छूट जाने का,
जिसे मुकम्मल कभी पकड़ा ही नहीं था!

उस ख्वाब के टूट जाने का,
जिसे पूरा कभी देखा ही नहीं था!

उस दर्द के खत्म हो जाने का,
जिसे अंदर तक कभी सहा ही नहीं था!

उस प्यार के खत्म हो जाने का,
जिसे कभी दिल खोल के जिया ही नहीं!

सुनो!
उस हाथ को पकड़कर,
हर ख्वाब पूरा करके,
दिल खोलकर जीना चाहता हूँ!

आज फिर मौका है,
कसकर थाम लो मेरा हाथ,
क्योंकि आज भी दर्द है,
"उस हाथ के छूट जाने का,
जिसे मुकम्मल कभी पकड़ा ही नहीं था!"

जिंदगी आसान थी

जब बच्चे थे, जिंदगी आसान थी!

खुशनुमा हर शाम थी, चेहरे पर मुस्कान थी,
बेफिक्र होकर सोते थे, जिंदगी आसान थी!

थोड़ी तोतली सी जबान थी, खिलौनों में जान थी,
पैंट गीली कर दिया करते थे] जिंदगी आसान थी!

बेसिर-पैर के काम थे, घर-घर खेला करते थे,
बिन शादी के बीवी मिल जाती थी, जिंदगी आसान थी!

उल्टे-सीधे नाम थे, न मोटे होने का डर था,
न पतले रहने की फिकर थी, दिन भर चॉकलेट खाते थे,

बिना पिम्पल्स के खौफ के मिट्टी में सो जाते थे,
बोलते हुए क्यूट लगते थे, रोते हुए भी अच्छे लगते थे,
अब सबको म्यूट ही अच्छे लगते हैं,

हरकतों से हमारी पूरी दुनिया परेशान थी,
जब बच्चे थे, तब जिंदगी आसान थी!

ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं

ज्यादातर रिश्ते मजबूरी में निभा रहे हैं,
बताओ, ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं?

न जानते हैं किसी के हालातों को,
न समझते हैं किसी के जज्बातों को,
बिना सोचे बस बैक बिचिंग किये जा रहे हैं,
बताओ, ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं?

पर गलती हमारी भी नहीं है,
व्यवहार और संस्कारों के चक्कर में,
न सबके साथ खुश रह पा रहे हैं,
न अपने काम से काम रख पा रहे हैं,
बताओ, ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं?

ज्यादातर रिश्ते मजबूरी में निभा रहे हैं,
बताओ, ये कैसी जिंदगी जिये जा रहे हैं?

तुम्हारे लिए

गुजरते वक्त से कुछ लम्हे तोड़ लाया हूँ तुम्हारे लिए,
तुम फुरसत बनकर आना कभी!

दिल की सरहद पर अपनी मोहब्बत के लिए लड़ रहा हूँ खुद से,
तुम शहादत बनकर आना कभी!

इन मोहब्बत की गलियों में सबसे बड़ा फकीर हूँ मैं,
तुम शोहरत बन कर आना कभी!

गुजरते वक्त से कुछ लम्हे तोड़ लाया हूँ तुम्हारे लिए,
तुम फुरसत बनकर आना कभी!

सूख से गए हैं कुछ सपने मेरी आँखों में,
तुम हसरत बन कर आना कभी!

इस टूटी फूटी क्यूटी पटूटी सी जिंदगी में मैं बहुत खुश हूँ,

तुम कयामत बनकर आना कभी!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

हर किसी की जिंदगी में सपने, अपने, दोस्ती, प्यार, करियर, सवाल-जवाब जैसी बातें होती ही हैं जो बहुत कॉमन हैं, पर उसको खास बना देती है कुछ आदतें जैसे अपने अंदर कोई और बैठा हो जो बताता जा रहा हो कि तुम सचमुच खुद से, अपनों से, समाज से, दुनिया से क्या चाहते हो,..!

मैं भी इसी दुनिया का हिस्सा हूँ, दादा-पापा से सोचने की आदत विरासत में मिली तो मम्मी से जज्बातों को शब्दों में बयां करने लत! खुद नहीं जानता कब से लिखता हूँ, क्यों लिखता हूँ, किसके लिए लिखता हूँ, पर लिखता हूँ इंस्टाग्राम पर #AlwaysKabhiKabhi के नाम से। जो मम्मी को हमारे घर के जग्गा जासूसों यानि मेरे ट्विन्स ब्रो-सिस जैनम-जयति से पता चल गया। पिछले तीन साल से पढ़ाई के लिए बाहर ही रहा इसलिए मम्मी-पापा को पता नहीं था पर फ्रेंड्स और जैनम-जयति इंस्टाग्राम पर मुझे पढ़ते रहते थे।

लॉकडाउन के कुछ पहले से घर पर ही था, मम्मी ने जिद करके लॉकडाउन पब्लिशिंग प्लान्स का हिस्सा बना लिया। इस शर्त के साथ कि आप मेरी पोयम्स से मुझे जज नहीं करोगे, बेमतलब के सवाल नहीं करोगे मैंने अपनी रचनाएँ मम्मी को दे दी। इस वादे के साथ कि मैं लिखता रहूँगा ऐसे ही क्योंकि लिखना वैसे भी ऐसे लॉकडाउन के समय खाली समय का उपयोग करते हुए, पढ़ाई, फ्यूचर आदि के स्ट्रेस से दूर रखता है।

आप सब पढ़ें और मुझे गाइड करें ताकि मैं इससे बैटर लिख पाऊं।
#AlwaysKabhiKabhi

रचनाकार

तन्मय सुराना

सुराना फैशन
१५, नेहरू चौक, वारासिवनी
जिला- बालाघाट (म.प्र.)

Email- suranatanmay@gmail.com
Mobile - 9171790015

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-192-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/